बड़ों की बात मानो

एक बड़ा भारी जंगल था, पहाड़ था और उसमें पानी के शीतल निर्मल झरने थे। जंगल में बहुत-से पशु रहते थे। पर्वत की गुफा में एक शेर, एक शेरनी और शेरनी के दो छोटे बच्चे रहते थे । शेर और शेरनी अपने बच्चों को बहुत प्यार करते थे ।

जब शेर के बच्चे अपने माँ-बाप के साथ जंगल में निकलते थे, तब उन्हें देखकर जंगल के दूसरे पशु भाग जाया करते थे । लेकिन शेर-शेरनी अपने बच्चों को बहुत कम अपने साथ ले जाते थे । वे बच्चों को गुफा में छोड़कर वन में अपने भोजन की खोज में चले जाया करते थे ।

शेर और शेरनी अपने बच्चों को बार-बार समझाते थे कि वे अकेले गुफा से बाहर भूलकर भी न निकलें । लेकिन बड़े बच्चे को यह बात अच्छी नहीं लगती थी । एक दिन जब बच्चों के माँ-बाप जंगल में गये थे, बड़े बच्चे ने छोटे से कहा- 'चलो झरने से पानी पी आएं और वन में थोड़ा घूम लें । हिरनों को डरा देना मुझे बहुत अच्छा लगता है ।'

छोटे बच्चे ने कहा- 'पिताजी ने कहा है कि अकेले गुफा से मत निकलना । झरने के पास जाने को तो उन्होंने बहुत मना किया है । तुम ठहरो । पिताजी या माताजी को आने दो। हम उनके साथ जाकर पानी पी लेंगे ।'

बड़े बच्चे ने कहा- 'मुझे प्यास लगी है । सब पशु तो हम लोगों से डरते ही हैं । डरने की क्या बात है ?'

छोटा बच्चा अकेला जाने को तैयार नहीं हुआ । उसने कहा- 'मैं तो माँ-बाप की बात मानूँगा। मुझे अकेला जाने में डर लगता है ।' बड़े भाई ने कहा- 'तुम डरपोक हो, मत जाओ, मैं तो जाता हूँ ।' बड़ा बच्चा गुफा से निकला और झरने के पास गया । उसने भर पेट पानी पिया और तब हिरनों को ढूँढने इधर-उधर घूमने लगा ।

उस जंगल में उस दिन कुछ शिकारी आए थे । शिकारियों ने दूर से शेर के अकेले बच्चे को घूमते देखा तो सोचा कि इसे पकड़कर किसी चिड़ियाघर में बेच देने से रुपए मिलेंगे । छिपे-छिपे शिकारी लोगों ने शेर के बच्चे को चारों ओर से घेर लिया और एक साथ उस पर टूट पड़े । उन लोगों ने कम्बल और कपड़े डालकर उस बच्चे को पकड़ लिया ।

बेचारा शेर का बच्चा क्या करता । वह अभी कुत्ते जितना बड़ा भी नहीं हुआ था । उसे कम्बल में खूब लपेटकर उन लोगों ने रस्सियों से बाँध दिया था । वह न तो छटपटा सकता था, न गुर्रा सकता था ।

शिकारियों ने इस बच्चे को एक चिड़ियाघर को बेच दिया । वहाँ वह एक लोहे के कटघरे में बंद कर दिया गया । वह बहुत दुःखी था । उसे अपने माँ-बाप की बड़ी याद आती थी । बार-बार वह गुर्राता और लोहे की छड़ों को नोचता था, लेकिन उसके नोचने से छड़ टूट तो सकती नहीं थी ।

जब भी वह शेर का बच्चा किसी छोटे बालक को देखता था, बहुत गुर्राता और उछलता था । यदि कोई उसकी भा-ा समझता तो वह उससे अवश्य कहता- 'तुम अपने माँ-बाप तथा बड़ों की बात जरूर मानना । बड़ों की बात न मानने से पीछे पश्चाताप करना पड़ता है । मैं बड़ों की बात न मानने से ही यहाँ बंदी हुआ हूँ ।'

सच है--

जे सठ निज अभिमान बस सुनहिं न गुरुजन बैन।
ते जग महँ नित लहहिं दुख कबहुँ न पावहिं चैन ।।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

सबसे बड़ा धर्मात्मा

एक राजा के चार लड़के थे । राजा ने बुलाकर बताया कि 'जो सबसे बड़े धर्मात्मा को ढूँढ लाएगा, वही राज्य का अधिकार पाएगा ।' चारों लड़के घोड़ों पर सवार हुए और चारों दिशाओं में चले गए ।

एक दिन बड़ा लड़का लौटा । उसने पिता के सामने एक सेठजी को खड़ा कर दिया और बताया- 'ये सेठजी सदा हजारों रुपए दान करते हैं । इन्होंने बहुत - से मंदिर बनवाए हैं, तालाब खुदवाए हैं और अनेक स्थान पर इनकी ओर से प्याऊ चलते हैं । तीर्थों में इनके सदाव्रत चलते हैं, ये नित्य कथा सुनते हैं, साधु-ब्राह्मण को भोजन कराकर भोजन करते हैं। गौ-पूजन करते हैं, इनसे बड़ा धर्मात्मा संसार में कोई नहीं है ।'

राजा ने कहा- 'ये निश्चय ही धर्मात्मा हैं ।' सेठजी का आदर- सत्कार हुआ और वे चले गए ।

दूसरा लड़का एक दुबले-पतले ब्राह्मण को लेकर लौटा । उसने कहा- 'इस विप्रदेव ने चारों धामों तथा सातों पुरियों की पैदल यात्रा की है । ये सदा चन्द्रायणव्रत ही करते रहते हैं। झूठ से तो सदा डरते हैं । इन्हें क्रोध करते किसी ने कभी नहीं देखा । नियम से मंत्र-जप करके तब जल पीते हैं । तीनों समय स्नान करके संध्या करते हैं । इस समय विश्व में ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं ।'

राजा ने ब्राह्मण देवता को प्रणाम किया । उन्हें बहुत-सी दक्षिणा दी और कहा- 'ये अच्छे धर्मात्मा हैं ।'

तीसरा लड़का भी आया। उसके साथ एक बाबाजी थे । बाबाजी ने आते ही आसन लगाकर नेत्र बंद कर दिए । उनकी बड़ी भारी जटा थी । शरीर में केवल हड्डियाँ भर जान पड़ती थीं । उस लड़के ने बताया कि 'महाराज बहुत प्रार्थना करने पर पधारे हैं । बहुत बड़े तपस्वी हैं । सात दिनों में केवल एक बार दूध पीते हैं । गरमी में पंचाग्नि तापते हैं । सर्दी में जल में खड़े रहते हैं । सदा भगवान् का ध्यान करते हैं, इनके समान धर्मात्मा की बात सोचना भी कठिन है ।'

राजा ने महात्मा को दण्डवत् किया - महात्मा आशीर्वाद देकर बिना कुछ कहे चलते बने । राजा ने कहा- 'अवश्य ये बड़े धर्मात्मा हैं ।'

सबसे अंत में छोटा लड़का आया । साथ में मैले कपड़े पहने एक देहाती किसान था । वह किसान दूर से ही हाथ जोड़कर डरता हुआ राजा के सामने आया । तीनों बड़े लड़के छोटे भाई की मुर्खता पर हँसने लगे । छोटे भाई ने कहा - 'एक कुत्ते के शरीर में घाव हो

गए थे । पता नहीं किसका कुत्ता था, इसने देखा और लगा घाव धोने । मैं इसे ले आया हूँ । पता नहीं, यह धर्मात्मा है या नहीं? आप पूछ लें ।'

राजा ने पूछा - 'तुम क्या धर्म करते हो ?'

डरते हुए किसान ने कहा - 'मैं अनपढ़ हूँ, धर्म क्या जानूँ । कोई बीमार होता है तो सेवा कर देता हूँ । कोई माँगता है तो मुट्ठी भर अन्न दे देता हूँ ।'

राजा ने कहा - 'यह सबसे बड़ा धर्मात्मा है ।' सब लड़के इधर-उधर देखने लगे, तो राजा ने कहा -

दान-पुण्य करना, देवताओं की और गौ की पूजा करना धर्म है । झूठ न बोलना, क्रोध न करना तीर्थ यात्रा करना, संध्या करना, पूजा करना भी धर्म है - तपस्या करना तो धर्म है ही ; किंतु सबसे बड़ा धर्म है - बिना किसी चाह के असहाय प्राणियों की सेवा करना । बिना किसी स्वार्थ के भूखे को अन्न देना, रोगी की टहल करना, क-ट में पड़े हुए की सहायता करना- सबसे बड़ा धर्म है । जो दूसरे प्राणियों की भलाई करता है, उसकी भलाई अपने-आप होती है । तीनों लोकों के स्वामी भगवान् उस पर प्रसन्न होते हैं ।

'पर हित सरिस धर्म नहिं भाई'

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

नियम

एक दिन एक संत अपने आश्रम में आए भक्तों को नियमों की बात समझा रहे थे । संत ने नियमों पर चलने वाला एक महान उदाहरण बताया तो सहसा एक भक्त ने पूछा- 'हे देव, जगत में वो कौन है जो नियमों का शत-प्रतिशत पालन करता हो ?' संत ने बताया कि 'वो सूर्यदेव है जो इन नियमों का शत-प्रतिशत पालन करता है । सदा समय पर चलना और सभी के साथ समान व्यवहार करना उसका परम कर्म है ।' संत के विचार सुनकर भक्त प्रसन्न हुआ । इसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में नियमों का सदैव पालन करना चाहिए ।

संग्रहकर्त्ताः-
वेद पाराशर
सहा. निदेशक, हिंदी अनुभाग
मानकीकरण निदेशालय